गंगा किनारे पर्यटन नेटवर्क विकसित करेगी सरकार

नई दिल्ली, प्रेट्र: गंगा नदी के किनारे ऐतिहासिक व पौराणिक महत्व के स्थलों को बढ़ावा देने और आसपास के क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए सरकार पर्यटन नेटवर्क तैयार करने की योजना बना रही है। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन' (एनएमसीजी) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, गंगा से जुड़े पर्यटन की बात की जाए तो इसके आसपास बहुत सारे ऐतिहासिक स्थान मौजूद हैं। चाहे वह रामायण हो या महाभारत, इसमें से बहुत सी घटनाएं गंगा के मैदानी इलाके में हुई हैं। काशी और प्रयागराज ऐसे शहर हैं, जो पौराणिक व धार्मिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण हैं।

अधिकारी ने कहा, इसके अलावा साड़ियां और विशेष व्यंजन इन क्षेत्रों के उत्पाद हैं। हम इन सभी को एकीकृत कर 'आजादी का महोत्सव' के तहत पर्यटन उत्सव आयोजित कर सकते हैं। इसलिए, हम इस बारे में सारी जानकारी प्रदान करेंगे और पर्यटन विभाग इस पर काम करेगा।

एनएमसीजी के अधिकारी ने कहा कि 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के तहत आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने और नदी के संरक्षण के लिए माहौल बनाने की योजना है। इस नदी से लाखों लोगों की आजीविका भी जुड़ी हुई है। अधिकारी ने कहा कि नदी किनारे हमने कई घाटों का निर्माण किया है। अब तक 160 घाटों का निर्माण किया जा चुका है, लेकिन इनकी देखभाल और प्रबंधन करने वाला कोई नहीं है। फिर हमने सोचा कि क्यों न इन घाटों को स्थानीय आजीविका से जोड़ दिया जाए? हम कुछ इकाइयों से कह सकते हैं कि वह यहां पर प्रतिदिन 'आरती' करे। इससे पर्यटक आकर्षित होंगे। इसके अलावा हम वहां हाट भी लगा सकते हैं। इन घाटों पर किसान प्रत्येक सप्ताह अपना उत्पाद बेचने के लिए आ सकते हैं। इस कार्यक्रम को हमने 'घाट में हाट' नाम दिया है।

तैयारी

- नदी किनारे बनाए गए घाटों पर प्रतिदिन 'आरती' से पर्यटक आकर्षित होंगे
- स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए 'घाट में हाट' योजना पर हो रहा विचार

कई प्रमुख शहरों से गुजरती है गंगा

- 2,520 किलोमीटर लंबी गंगा हरिद्वार, कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी, गाजीपुर, पटना और कोलकाता जैसे प्रमुख शहरों से गुजरती है।
- केंद्र ने नमामि गंगे कार्यक्रम से नदी को साफ करने के लिए काफी धन खर्च किया है।
- नमामि गंगे को सरकार ने एक महत्वाकांक्षी योजना घोषित किया है। इस योजना का परिव्यय बजट 20 हजार करोड़ रुपये है।